आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 10 अंक : 4 दिसम्बर, 2022 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

राष्ट्रीय किसान दिवस : अन्नदाता का सम्मान

राष्ट्रीय किसान दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं। भारत एक कृषि प्रधान देश है। हमारी सम्पन्नता हमारे कृषि उत्पादन पर निर्भर करती है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भारतीय किसानों की एक बड़ी भूमिका है। यहां की अधिकांश जनसंख्या गांवों में रहती है तथा कृषि व पशुपालन का कार्य करके अपना ही नहीं, अपितु अपने देश का भी भरण–पोषण करती है। भारत में लगभग सात लाख गांव है और इन गांवों में अधिकांश किसान ही बसते हैं तथा यह भारत की आबादी के 58 प्रतिशत के बराबर है। भारत में किसानों को अन्नदाता कहा जाता है और उन्हीं की वजह से ही यह देश कभी भूखा नहीं रहता। किसानों के बिना जिन्दगी और दुनिया के अस्तित्व को सोचा भी नहीं जा सकता है। बहुत ही खुशी की बात है कि हमारे समाज का यह वर्ग ऐसा है जो हमारे भरण–पोषण का काम देखता है। किसानों को अच्छे अनाज उत्पादन व पशुपालन के लिए बहुत कठिन कार्य, मेहनत एवं संघर्ष करना पड़ता है। खेतों में समय पर खाद् डालना, पानी सींचना, खरपतवार निकालना, कीड़े–मकोड़े से बचाना, आदि तथा पशु स्वास्थ्य, उत्पादन, प्रजनन आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिससे कई बार किसानों को नुकसान भी उठाना पड़ता है। इन्हीं सब समस्याओं को देखते हुए तथा किसानों की समस्याओं को दूर करने के लिए भारत तथा राज्य सरकारों द्वारा कई प्रकार के कदम उठाये गए हैं। किसान व पशुपालक वर्ग देश के विकास में योगदान देने वाला सबसे महत्वपूर्ण वर्ग है, इसलिए इन्हें सम्मान देना और इनके लिए एक विशेष दिवस के रूप में मनाना किसानों को सामाजिक रूप से सशक्त बनाता है। प्रत्येक वर्ष 23 दिसम्बर को किसानों के सम्मान और उनके प्रति अपना आभार प्रकट करने के लिए इस दिन को ''किसान दिवस'' के रूप में मनाया जाता है। इस दिवस का आयोजन भारत के पूर्व प्रधानमंत्री व किसान नेता चौधरी चरणसिंह के सम्मान में उनके जन्मदिवस को राष्ट्रीय किसान दिवस रूप में मनाया जाता है। हर वर्ष भारत के सभी राज्यों में राष्ट्रीय किसान दिवस बहुत ही उल्लास के साथ मनाया जाता है तथा इस दिवस पर कृषि कार्य सम्बन्धित जागरूकता लाने की कोशिश की जाती है। किसान दिवस में किसानों को नए–नए तरीकों से कृषि व पशुपालन की तकनीकें बताई जाती हैं तथा आधुनिक तकनीकों के प्रयोग के बारे में जागरूक किया जाता है ताकि कृषि व पशुपालन के कार्य सहज, आसानी तथा कम लागत में हो सकें। भारत सरकार द्वारा भी किसानों के हित के लिए तथा उनको प्रोत्साहन देने के लिए समय–समय पर अलग–अलग योजनाओं को लागू कर कृषि कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते है जिससे किसान आधुनिक खेती व पशुपालन की ओर अग्रसर रहें। अतः हम सभी को किसानों को कृषि व पशुपालन के वैज्ञानिक तरीकों से परिचित कराना चाहिए जिससे वे अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त कर सके। किसान दिवस पर मेरी तरफ से किसानों, पशुपालकों एवं अन्य सभी को पुनः शुभकामनाएं व बधाई।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ में किसान-पशुपालक एवं कृषि मेला

पशु विज्ञान केंद्र सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा उपनिदेशक कृषि एवं पदेन परियोजना निदेशक (आत्मा) श्रीगंगानगर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 16 नवम्बर को किसान पशुपालन एवं कृषि मेले का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि सौरव स्वामी, जिला कलेक्टर (श्रीगंगानगर), विशिष्ट अतिथि अरविंद जाखड़ (अतिरिक्त जिला कलेक्टर), संदीप कुमार, उपखण्ड अधिकारी (सूरतगढ़) थे। जिला कलेक्टर ने आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर 75 प्रगतिशील पशुपालकों को सम्मान प्रतीक भेंट कर सम्मानित किया तथा विभिन्न जिलों से आए हुए पशुपालकों व किसानों को संबोधित करते हुए कहा सीमांत और लघु किसानों को प्रगतिशील पशुपालकों से प्रेरित होकर पशुपालन व खेती में नए आयाम स्थापित कर एक जागरूक पशुपालक बने तथा सरकार द्वारा दी जा रही विभिन्न योजनाओं का लाभ भी उठाएं। राजाराम गोदारा (समाजसेवी) व अनिल धानुका (लोकपाल श्रीगंगानगर) ने आए हुए मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि डॉ वी.के. पाटील, डॉ. आर.के दाधीच डी.डी.एम. चंद्रेश शर्मा, एल.डी.एम. विनोद कुमार, मुकेश जाट, डॉ. रामवीर शर्मा, डॉ. जी.आर. मटोरिया, डॉ सीमा चावल, टाटिया कॉलेज से डॉ आर पी एस बघेल, डॉ. इरशाद खान, रामअवतार बुरडक (प्रधानाचार्य केंद्रीय विद्यालय नवोदय) रामकुमार लेघा एस.एच.ओ.,सूरतगढ़ ने मेले में अपने–अपने विभाग के द्वारा दी जाने वाले विभिन्न महत्वपूर्ण योजनाओं सेवाओं, सरकारी सहायता के बारे में तथा डॉ. सुरेंद्र श्योराण, डॉ.योगेश कुमार, डॉ. मुकेश थोरी, डॉ.अनिल घोड़ेला, डॉ. मनीष कुमार सेन, डॉ.दिनेश कुमार, डॉ.रोहतास सैनी, डॉक्टर कंचन बिश्नोई, डॉ.नीलम ने आए हुए पशुपालकों को विभिन्न प्रकार की पशुपालन संबंधित जानकारियां विस्तार से दी। पशु विज्ञान केंद्र प्रभारी अधिकारी डॉ राजकुमार बेरवाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में 900 से अधिक विभिन्न जिलों के पशुपालकों व किसानों ने भाग लिया।

पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण पर जागरुकता

वेटरनरी विश्वविद्यालय के जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्योगिकी केंद्र, राजुवास द्वारा दिनांक 10 नवम्बर को आकाशदीप पब्लिक स्कूल, बीकानेर में तथा 30 नवम्बर को नवीन शिक्षा निकेतन स्कूल, बीकानेर में छात्र छात्राओं हेतु अपशिष्ट निस्तारण जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्यौगिकी केंद्र की मुख्य अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने बताया कि इस अवसर पर विद्यार्थियों को मनुष्य में फैलने वाले संक्रामक रोगों एवं अपशिष्ट का उचित निस्तारण के माध्यम से संक्रामक रोगों पर नियंत्रण हेतु व्याख्यान प्रस्तुत किये गए। कार्यक्रम के तहत पेम्पलेट वितरण कर विद्यार्थियों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता उत्पन्न की गई। जागरूकता कार्यक्रम में डॉ. मनोहर सैन, डॉ. देवेन्द्र चौधरी एवं भास्कर वैष्णव का सहयोग रहा। शिविर में आकाशदीप पब्लिक स्कूल, बीकानेर की प्रधानाचार्या श्रीमती अपराजिता तथा नवीन शिक्षा निकेतन स्कूल, बीकानेर के प्रबंधक कुशाग्र मिश्रा व अन्य शिक्षक गण उपस्थित रहे।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गाढवाला में आयुर्वेदिक चिकित्सा एवं वरिष्ठ नागरिक शिविर

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉसिबिलिटी के अंर्तगत गोद लिए गांव गाढ़वाला में 19 नवम्बर को आयुर्वेद विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय चिकित्सा एवं वरिष्ठ नागरिक शिविर का आयोजन किया गया। आयुर्वेद विभाग के डॉ. नंदलाल मीणा के नेतृत्व में तीन सदस्य दल ने शिविर में अपनी सेवाएं दी। यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉसिबिलिटी के समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने बताया कि शिविर के दौरान खांसी, जुकाम, बुखार, सिरदर्द, घुटनों के दर्द आदि रोगों का उपचार किया गया तथा ग्रामीणों के रक्तचाप की जांच भी की गई। शिविर में कुल 130 रोगियों का उपचार किया गया जिसमें से 60 वरिष्ठ नागरिक थे। शिविर के आयोजन में सुरेन्द्र कुमार, थॉमस, देवाराम एवं डॉ. निर्मल सिंह राजावत का भी सहयोग रहा।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 10, 11, 17 एवं 18 नवम्बर को गांव भासीणा, बाघसरा, मैनासर एवं बोबासर गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 14–15 एवं 28–29 नवम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण में 154 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 3, 5, 10 एवं 26 नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर, 24 नवम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 172 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 9, 11, 15, 17 एवं 19 नवम्बर को गांव शिमला, लुकास, ओडींट, हिरावती एवं सुनारी गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरो में 128 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 11, 15, 18, 19, 25 एवं 26 नवम्बर को गांव बदनगढ़, विजयनगर, धरवारी, कहैरा चौथ, अऊ और उमरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 151 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 4, 15, 18, 22 एवं 29 नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण तथा दिनांक 11 अक्टूबर को गांव खडेला में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 114 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 4, 7, 11, 14, 17, एवं 22 नवम्बर को गांव जागीरदर का पुरा, कोलारी का पुरा, लुधपुरा, नया नगला, दयेरी का पुरा, सियापुरा गांवों में तथा 25 नवम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों कुल 207 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 5, 9, 10, 11 एवं 15 नवम्बर को गांव गांवडी, हाथीखेड़ा, जामपुरा, बलाई की झोपड़ी तथा गामच गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा दिनांक 23–24 एवं 29–30 नवम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 191 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालोर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालोर द्वारा 9 एवं 15 नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 5, 10 एवं 19 नवम्बर को गांव मुदतरा सिली, कोकर एवं सीकवाड़ा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 82 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 17 एवं 22 नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 40 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 4, 7, 10, 15 एवं 18 नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण तथा 21 नवम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 193 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 7, 11 एवं 30 नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण तथा दिनांक 19–20, 21–22 एवं 25–26 नवम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 166 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा दिनांक 23, 24, 25 एवं 26 नवम्बर को गांव नवागारा, बगड़ा फला, हथोड एवं मांड़वा गांवों में एक दिवसीय आफॅलाईन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 117 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 11, 13, 17, 26 एवं 28 नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर तथा 29–30 नवम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 132 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 10, 19 एवं 21 नवम्बर को गांव थालड़का, मोधुनगर एवं चक–22 एवं 4 एवं 22–24 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय एवं तीन दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 165 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

सर्दी में पशुओं को न्यूमोनिया से बचाएं

सर्दी का प्रकोप बढ़ते ही पशुओं में न्यूमोनिया का खतरा बढ़ने लगता है, इससे पशु के बीमार होने के साथ ही उसकी मौत भी हो सकती है। मनुष्यों के साथ ही पशुओं में भी सर्दी का मौसम कई रोग पैदा कर सकते हैं। न्यूमोनिया फेफड़ों की बीमारी है जिसमें पशु की सांस गति बढ़ जाती है तथा सांस लेने में कठिनाई होती है। अधिक सर्दी के कारण यह रोग पशुओं में बढ़ता है। गौ पशुओं का यह प्रमुख रोग है।

कारण : न्यूमोनिया रोग अनेक प्रकार के जीवाणु तथा विषाणु के संक्रमण से उत्पन्न होता है। वैसे तो न्यूमोनिया अधिकतर कई प्रकार के संक्रामक रोगों में भी पाया जाता है तथा यह रोग कभी–कभी फेफड़ें के वायुकोष में परजीवी के प्रवेश के कारण भी पशु न्यूमोनिया से ग्रसित हो जाते हैं परन्तु सर्दी के मौसम में यदि पशु को रात में बाहर ही रखा जाए तो सर्दी लगने से भी यह रोग हो सकता है। गर्म होने के बाद शीघ्र ही सर्दी लग जाने, जाड़ों की बरसात में पशु के बाहर खड़ा रहने, परिवहन के दौरान सर्दी लगने तथा ठंडी रातों में चारागाह पर छूट जाने वाले पशुओं में प्रायः न्यूमोनिया बहुत जल्दी हो जाता है। ठंड का प्रभाव मुख्य रूप से युवा पशुओं में अधिक होता है। गौवत्सों को यदि पैदा होने के बाद पहली रात में ही बाहर छोड़ दिया जाए तो निश्चित रूप से वे न्यूमोनिया से ग्रसित हो जाते है। अतः न्यूमोनिया के उपचार तथा निवारण दोनों के लिए सर्दी के प्रभाव पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

लक्षण : न्यूमोनिया से ग्रसित पशुओं की नाक बहती रहती है। पशुओं में सांस लेने की समस्या हो जाती है। पशु हांफता रहता है। पशुओं में लम्बी सांसें व घड़घडाहट की आवाज आती है। पशु खाना कम कर देते हैं तथा अत्यधिक गम्भीर अवस्था में खाना छोड़ देते हैं। पशु सुस्त व दुर्बल हो जाता है। पशुओं में खांसी की समस्या हो जाती है। पशु के बुखार रहता है तथा शरीर का तापमान 104–105 डिग्री तक हो जाता है तथा दुग्ध उत्पादन भी कम हो जाता है। अगर समय पर इलाज न किया जाए तो पशु की मृत्यु भी हो जाती है।

उपचार : ठंड से बचाव के लिए रात में पशुशाला की खिड़की, दरवाजे और अन्य खुली जगह पर टाट के पर्दे या बोरी लगवाएं। ध्यान रहे कि दिन में सूर्य की रोशनी पशुशाला के अंदर आने में कोई बाधा न आए। अगर पशु शाला की छत सीमेंट या लोहें की है तो उसे पुआल से ढक दें। नवजात बछड़ों का ठंड से बचाव हेतु विशेष ध्यान रखें। साथ ही पशुओं को प्रातः 5 बजे से पहले और शाम को 5 बजे के बाद पशुशाला के बाहर न निकलें। दोपहर के समय उन्हें बाहर निकालें इससे उनको गर्मी मिलती है तथा पशुशाला का फर्श भी सूख जाता है। अगर पशुओं को नहलाना है तो उन्हें अच्छी धूप वाले दिन ही नहलाएं तथा गरम पानी का प्रयोग करें। यदि पशु में न्यूमोनिया के लक्षण हो तो पशुचिकित्सक की सलाह पर बन्टीबायोटिक तथा बुखार उतारने की दवा देनी चाहिए। इसके अलावा खांसी होने पर कफ नाशक दवा साथ ही सूजन कम तथा यकृत (लीवर) मजबूत करने के लिए दवाई देनी चाहिए। पशुपालक को निकटतम पशुचिकित्सक से तुरन्त सम्पर्क करना चाहिए।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–दिसम्बर, 2022

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	बहुत कम संभावना
लंगडा बुखार	गाय, भैंस	श्रीगंगानगर, जोधपुर	–	–
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	अजमेर, भरतपुर, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, उदयपुर
खुरपका–मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	जयपुर	अलवर, श्रीगंगानगर, झुंझुनू, सीकर, टोंक	चूरू, बाड़मेर, भरतपुर, बीकानेर, दौसा, हनुमानगढ़, कोटा, नागौर, उदयपुर, बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चूरू, बारां, भरतपुर, बूंदी, चित्तौडगढ़, धौलपुर, करौली, प्रतापगढ़, राजसमन्द, सवाई माधोपुर, जैसलमेर
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	जयपुर	राजसमन्द	अजमेर, बारां, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चित्तोड़गढ़, गंगानगर, हनुमानगढ़, जालौर, झालावाड़, झुंझुनू, जोधपुर, कोटा, नागौर, प्रतापगढ़, सवाई माधोपुर, सीकर, सिरोही, टोंक, उदयपुर
पी.पी.आर.	बकरी	जैसलमेर	झालावाड़	बाड़मेर, भीलवाड़ा, उदयपुर
फेसीयोलोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	बांसवाडा	–	–
लंपी स्किन डीजीज	गाय, भैंस	–	–	कोटा, बारां, बूंदी
कैमल पॉक्स	ऊँट	–	–	बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर

पशुओं में बांझपन के कारण और बचाव

पशुपालन और डेयरी उद्योग में पशुओं का बांझपन काफी हद तक बड़े नुकसान के लिए जिम्मेदार है। बांझ पशु को पालना किसान के लिए आर्थिक बोझ साबित हो रहा है। दूध देने वाले पशु बांझपन और प्रजनन विकारों से प्रभावित हो सकते हैं। इनके उपचार में होने वाला खर्च तथा भविष्य में होने वाले बछड़ा या बछड़ी का नुकसान पशुपालन के आर्थिक लाभांश को कम करता है, इसलिये अगर हम पशु पालन को नये आयाम तक पहुंचना चाहते हैं, तथा हमारे किसान की आर्थिक दशा में सुधार चाहते हैं, तो हमे हमारे पशुओ को प्रजनन की दृष्टि से अधिक गुणवान बनाना होगा, उनकी प्रजनन दर को उचित वांछनीय पैमाने तक लाना होगा। उचित प्रजनन दर हासिल करने के लिए नर और मादा दोनों पशुओं को अच्छी तरह से खिलाया–पिलाया जाना चाहिए और रोगों से मुक्त रखा जाना चाहिए।

बांझपन के कारण :

बांझपन के कई सामान्य और जटिल कारण हो सकते हैं। मुख्य रूप से मादा में कुपोषण, बच्चेदानी या जननागों का संक्रमण, जन्मजात दोष, प्रबंधन त्रुटि, अंडाणुओं के विकास में बाधा तथा शरीर में हार्मोनों का असंतुलन पशुओं में विभिन्न प्रकार एवं स्तर का बांझपन पैदा कर सकते हैं। इन सब के अलावा नर पशु का वीर्य भी उत्कृष्ट गुणवत्ता का होना चाहिए। गायों और भैंसों दोनों का यौन चक्र 18–21 दिन का होता है। जिसमें एक बार 18–24 घंटे के लिए पशु गर्मी के लक्षण दिखता है, जो की पशु के प्रजनन का सही समय होता है। गाय में भैंस की तुलना में गर्मी के लक्षणों की पहचान करना आसान है क्योंकि भैंस में यह चक्र काफी बार शांत अवस्था में निकल जाता है, जिसे मूक मद भी कहते हैं। यह किसानों के लिए एक बड़ी समस्या है। इसके लिए किसानों को सुबह से देर रात तक 4–5 बार जानवरों की सघन निगरानी करनी चाहिए। उत्तेजना का गलत अनुमान बांझपन के स्तर में वृद्धि कर सकता है। उत्तेजित पशुओं में मद के लक्षणों का अनुमान लगाना काफी कौशलपूर्ण बात है। जो किसान अच्छा रिकॉर्ड बनाए रखते हैं और जानवरों की हरकतें देखने में अधिक समय बिताते हैं, बेहतर परिणाम प्राप्त करते हैं।

बांझपन से बचाव:

- ब्रीडिंग मद के लक्षणों के दौरान की जानी चाहिए।
- जिन्हें चक्र नहीं आ रहा हो, उनकी जांच कर इलाज किया जाना चाहिए।
- कीड़ों से प्रभावित होने पर 4 महीने में एक बार पशुओं का डीवर्मिंग कर उनका स्वास्थ्य ठीक रखा जाना चाहिए।
- पशुओं को ऊर्जा के साथ प्रोटीन, खनिज और विटामिन की आपूर्ति करने वाला संतुलित आहार दिया जाना चाहिए। संतुलित आहार गर्भाधान की दर में वृद्धि करता है, स्वस्थ गर्भावस्था एवं सुरक्षित प्रसव सुनिश्चित करता है। साथ ही संक्रमण की सम्भावनाओं को कम करता है।
- उचित पोषण पशुओं को शारीरिक वजन के साथ सही समय में यौन चक्र प्राप्त करने में मदद करता है, जो प्रजनन और बेहतर गर्भाधान के लिए उपयुक्त होता है।
- बछड़े को जन्मजात दोष और संक्रमण से बचाने के लिए नर पशु से सेवा लेते समय सांड के प्रजनन इतिहास की जानकारी बहुत महत्वपूर्ण है।
- गायों की (सर्विस या मेटिंग) अथवा कृत्रिम गर्भाधान करने और बछड़े पैदा करने से गर्भाशय के संक्रमण को काफी हद तक रोका जा सकता है, जो की भविष्य में होने वाली बांझपन की समस्याओं से बचाता है।
- गर्भाधान के 60–90 दिनों के बाद गर्भावस्था की पुष्टि के लिए जानवरों की जांच योग्य पशु चिकित्सकों द्वारा कराई जानी चाहिए।
- गर्भावस्था के अंतिम चरण के दौरान अनुचित तनाव और परिवहन से परहेज किया जाना चाहिए।
- गर्भवती पशु को बेहतर खिलाई–पिलाई प्रबंधन और प्रसव देखभाल के लिए सामान्य पशुओं के समूह से अलग रखना चाहिए।
- गर्भवती जानवरों का प्रसव से दो महीने पूर्व दूध निकाल कर थनों को सुखा देना चाहिए तथा उन्हें पर्याप्त पोषण और व्यायाम दिया जाना चाहिए। इससे मां के स्वास्थ्य में सुधार करने में मदद मिलती है। औसत वजन के साथ एक स्वस्थ बछड़े या बछड़ी का प्रजनन होता है, रोगों में कमी होती है और यौन चक्र की शीघ्र वापसी होती है।

पशु को गाभित करवाने का सही समय बांझपन का उपचार:

- अगर किसी कारणवश पशु में बांझपन की समस्या आ जाती है, तो फिर पशु का उचित समय पर प्रशिक्षित पशुचिकित्सक से उचित उपचार करवाना चाहिए।
- यदि पशु के जननांगो में कोई आनुवांशिक व्याधि है तो फिर ऐसे पशुओं को प्रजनन के समूह से निकाल देना चाहिए क्योंकि ऐसे पशु का उपचार व्यर्थ है।
- पशु में किसी प्रकार के पोषण की कमी है तो उचित आहार के साथ खनिज मिश्रण (मिनरल मिश्रण), विटामिन तथा एंटीओक्सिडेंट अनुपूरक देना चाहिए।
- पशु के जननागों की उचित जांच करवानी चाहिए। यदि बच्चेदानी (गर्भाशय) में किसी प्रकार का संक्रमण है तो पशुचिकित्सक की निगरानी में सही एंटीबायोटिक से वांछित समय अवधि तक उपचार करवाना चाहिए।
- यदि पशु के मद, अंडाणु निर्माण या अंडोत्सर्जन तथा भ्रूण के शीघ्रपतन से सम्बन्धित कोई समस्या है तो उचित हार्मोन (जीनआरएच तथा प्रोजेस्टेरोन अथवा दोनों) के उपचार से इसका निवारण संभव है। परन्तु यह उचित चिकित्सा परामर्श एवं पशुचिकित्सक की निगरानी में ही होना चाहिए।
- नर पशु से गाभित करवाने अथवा कृत्रिम गर्भाधान के पश्चात क्लाइटोरिस की मसाज से शुक्राणुओं को अंडे तक पहुंचने में मदद मिलती है।

डॉ. प्रमोद कुमार एवं डॉ. विनय मिल
पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

दुधारू पशुओं के लिए साइलेज बनाना

साइलेज उत्पाद के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है, जब किसी भी हरे पौधे की सामग्री को ऐसी जगह पर रखा जाता है, जहां वह हवा की अनुपस्थिति में किण्वन कर सकता है। जब हरे चारे प्रचुर मात्रा में होते हैं तो उन्हें खराब मौसम के दौरान अच्छी गुणवत्ता वाले चारे की मांग को पूरा करने के लिए साइलेज के रूप में संरक्षित किया जाता है। साइलेज हरा रसीला चारा है जो कमोबेश अपनी मूल स्थिति में संरक्षित रहता है, जिसमें न्यूनतम गिरावट और चारे के पोषक तत्वों की न्यूनतम हानि होती है। हरे चारे के संरक्षण की प्रक्रिया को एन्सिलेज कहते हैं। साइलो वह पात्र है जिसमें साइलेज बनाया जाता है। हरा साइलेज 25–35 प्रतिशत के डीएम (शुष्क पदार्थ) के साथ सबसे स्वादिष्ट और पौष्टिक प्रकार है। साइलेज बनाने के दौरान, शर्करा का किण्वन एसिड बनाता है और कुछ चारा प्रोटीन को अमोनिया सहित सरल यौगिकों में तोड़ देता है।

साइलेज के लाभ:

- ❖ फसलों को तब सुरक्षित किया जा सकता है जब मौसम उन्हें घास या सूखे चारे में उपचारित करने की अनुमति नहीं देता है।
- ❖ साइलेज का उपयोग आम तौर पर किसी दिए गए भूमि क्षेत्र पर अधिक जानवरों को रखना संभव बनाता है।
- ❖ साइलेज वर्ष के किसी भी मौसम के लिए कम खर्च पर उच्च गुणवत्ता वाला रसीला चारा प्रस्तुत करता है।
- ❖ खराब घास बनाने वाली खरपत वार फसलों से संतोषजनक साइलेज का उत्पादन किया जा सकता है। सुनिश्चित करने की प्रक्रिया कई प्रकार के खरपतवार बीजों को मार देती है
- ❖ सूखे चारे की तुलना में बड़े क्षेत्र की फसल को साइलेज के रूप में कम जगह में संग्रहित किया जा सकता है।

फसलें:

घुलनशील शर्करा से भरपूर फसलें एन्सिलिंग के लिए सबसे उपयुक्त हैं। उदाहरण के लिए मक्का (मकई), ज्वार, बाजरा। 3–3.5 प्रतिशत शीरा मिलाकर उगाई गई और प्राकृतिक घासों को सुरक्षित किया जा सकता है

कटाई का चरण:

फसल की कटाई फूल आने और दूध की अवस्था के बीच करनी चाहिए। सामान्यतः मोटे तने वाली फसलों को साइलेज के रूप में संरक्षित किया जाता है जबकि पतले तने वाली फसलों को घास के रूप में संरक्षित किया जाता है।

साइलो:

- ▪ यह एक वायु रोधी संरचना है जिसे साइलेज के रूप में उच्च नमी वाले चारे के भंडारण और संरक्षण के लिए डिजाइन किया गया है।
- ▪ गड्ढे सिलोस आम हैं। चर आकार के साथ 2.4 से 3 मीटर गहराई में गड्ढे खोदे जाते हैं। 400 किलो चारे के लिए 1 क्यूबिक मीटर जगह चाहिए। एक साइलो के आकार की गणना गायों की संख्या और दूध पिलाने की अवधि के आधार पर की जानी चाहिए।

साइलेज की तैयारी:

उस फसल का चयन करें जिसे 30–35 प्रतिशत शुष्क पदार्थ होने पर सिलना है। जब कान आने लगते हैं तो फसल की कटाई की जाती है। चारे को पहले काटना हमेशा बेहतर होता है क्योंकि पैकिंग बेहतर होती है और पोषक तत्वों का नुकसान कम से कम होता है।

- चारा पूरे गड्ढे में समान रूप से वितरित किया जाना चाहिए। साइलो के शीर्ष पर चारे को जमीनी स्तर से 3–4 फीट ऊपर पैक किया जाना चाहिए। इसे लंबे समय तक धान के भूसे या सभी तरफ खराब गुणवत्ता वाली घास से ढंकना चाहिए और फिर गीली मिट्टी और गोबर से ढक देना चाहिए ताकि हवा और पानी के प्रवेश को रोका जा सके। परत लगभग 4–5 इंच मोटी हो सकती है।
- स्वाद और नाइट्रोजन की मात्रा में सुधार के लिए अनाज और घास में 0.5 प्रतिशत नमक, 1 प्रतिशत यूरिया मिलाया जाता है।
- तापमान लगभग 27 से 38 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ जाता है। किण्वन हरी फसलों को साइलेज में बदलने लगता है।
- दो महीने में साइलेज बनकर तैयार हो जाएगा।

साइलेज में किण्वन:

- ❖ किण्वन दो तरह से हो सकता है: लैक्टिक एसिड किण्वन और ब्यूटिरिक एसिड किण्वन।
- ❖ जब चारे में 65–75 प्रतिशत नमी और पर्याप्त चीनी होती है, तो एनारोबिक लैक्टिक एसिड बैक्टीरिया सक्रिय हो जाता है, जिससे उच्च गुणवत्ता (पीएच 4) का एक अच्छा साफ–सुगंधित साइलेज तैयार होता है।
- ❖ यदि चारा प्रोटीन युक्त पदार्थों में बहुत समृद्ध है, तो ब्यूटिरिक एसिड किण्वन हावी होगा। ब्यूटिरिक एसिड में तीखी, अप्रिय गंध होती है और इस तरह का साइलेज जानवरों को पसंद नहीं आता है।
- ❖ श्वसन के कारण पोषक तत्वों की हानि को कम करने, लैक्टिक एसिड बैक्टीरिया के तेजी से विकास को शुरू करने, मोल्ड गठन को रोकने के लिए, एरोबिक जीवों के विकास को रोकने के लिए हवा को छोड़कर 65–75 प्रतिशत की नमी सामग्री पर पौधे सामग्री को स्टोर करें।

रंग:

जब साइलो में तापमान मध्यम होता है, तो साइलेज पीला या भूरा हरा और कभी–कभी सुनहरे रंग का भी हो जाता है। यह क्लोरोफिल पर कार्बनिक अम्लों की क्रिया और इसके भूरे, मैग्नीशियम मुक्त वर्णक, फियोफाइटिन में इसके रूपांतरण के कारण होता है। साइलो में तापमान अधिक होने पर साइलेज गहरा भूरा या काला हो जाता है।

गुणवत्ता:

- ❖ बहुत अच्छे साइलेज में अम्लीय स्वाद और गंध होती है, यह ब्यूटिरिक एसिड, फफूँद से मुक्त होता है, इसका पीएच 3.5–4.2 रेंज में होता है, इसमें 1–2 प्रतिशत लैक्टिक एसिड और अमोनिया नाइट्रोजन कुल नाइट्रोजन का 10 प्रतिशत से कम होता है।
- ❖ अच्छे साइलेज में अम्लीय स्वाद और गंध होती है, इसमें ब्यूटिरिक एसिड के निशान होते हैं, इसका पीएच 4.2–4.5 और इसमें अमोनिया नाइट्रोजन कुल नाइट्रोजन का लगभग 10–15 प्रतिशत होता है।
- ❖ फेयर साइलेज में कुछ ब्यूटिरिक एसिड, मामूली प्रोटियोलिसिस, कुछ फफूँद, पीएच 4.8 और 20 प्रतिशत अमोनिया नाइट्रोजन होता है।

अच्छा साइलेज बनाने के लिए चेक लिस्ट:

- ❖ फसल के समय खराब मौसम से बचें।
- ❖ फसल की कटाई की मात्रा का आकलन करें।
- ❖ साइलो की स्थिति की जाँच करें।
- ❖ फसल के विकास चरण की जाँच करें।
- ❖ गुड़, नमक आदि मिलाना।
- ❖ साइलो की उचित फिलिंग।
- ❖ साइलो को ढंकना और सील करना।

डॉ. महेन्द्र सिंह मील व डॉ. मुकेशचन्द शर्मा
वेटरनरी कॉलेज, नवानिया, वल्लभनगर, उदयपुर

प्रसव काल में पशुओं की देखभाल कैसे करें ?

अधिक दुग्ध उत्पादन के लिए यह आवश्यक है कि पशुओं का स्वास्थ्य अच्छा रहे और उनके ब्याहने के समय में उनको किसी प्रकार की तकलीफ न हो पशु के बच्चा देने से पहले और बच्चा देने के बाद देखभाल में थोड़ी सी भी लापरवाही उसके बच्चे व दूध के उत्पादन पर बुरा असर डालती है। हमारे समाज में पशुओं की देख–रेख व खान–पान का काम अधिकतर महिलाएं करती है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि महिलाओं (विशेषतया) को इस बात की जानकारी दी जाए कि पशुओं की प्रसूतिकाल में देखभाल कैसे करें।

प्रसव से पूर्व

- ❖ प्रसव से दो माह पूर्व पौष्टिक एवं संतुलित आहार देना शुरू कर देना चाहिए जो कि हल्का व सुपाच्य हो, ध्यान रहें आहार की मात्रा एकदम से ना बढ़ाएं।
- ❖ प्रसव से एक या दो सप्ताह पूर्व ग्याभिन पशु को अन्य पशुओं से अलग कर दें।
- ❖ प्रसूति गृह को साफ एवं असंक्रमित कर दें तथा इसके फर्श पर साफ मिट्टी, गेहूं या चावल का भूसा बिछा दें।
- ❖ इस दौरान विशेष रूप से अधिक दूध देने वाले एवं पहली बार ग्याभिन पशुओं को पर्याप्त मात्रा में खनिज मिश्रण युक्त आहार (विशेषतया कैल्शियम) दें।

प्रसव के दौरान

- ❖ प्रसव के ठीक समय योनि द्वार पर बच्चे के अग्र–पादसह खुर की उपस्थिति सुनिश्चित करें तथा जब बच्चा योनि से बाहर आने लगे तो हाथों द्वारा बाहर निकालने में सहायता करें।
- ❖ यदि बच्चेदानी में बच्चे की स्थिति सामान्य से विचलित या बच्चे के बाहर आने में पशु को अधिक तकलीफ हो तो तुरंत पशुचिकित्सक से परामर्श या सहायता लें।

प्रसव के पश्चात्

- ❖ सामान्यतया प्रसव के बाद 8–12 घंटे में जेर पूरी गिर जाती है इससे अधिक समय लगने पर तुरंत पशुचिकित्सक से सम्पर्क करें, ध्यान रहे पशु जेर को न खाने पाये।
- ❖ पशु के आस–पास स्थित गंदगी को दूर कर दें एवं जेर को आवास से उचित दूरी पर गढ्ढा खोद गाढ़ देवें।
- ❖ पशु के शरीर को एंटीसेप्टिक (लाल दवा) मिश्रित स्वच्छ व हल्के गर्म पानी से साफ करें।
- ❖ पशु को हल्का गुनगुना पानी या गुड–शर्बत पिलाएं जिससे कि उसके शरीर को गर्मी मिले।
- ❖ पशु को शुरू में गुड–दलिया व साथ में कुछ मात्रा में हरा चारा आहार के रूप में दे तथा पशु को सही मात्रा में खनिज मिश्रण युक्त आहार एवं अधिक दूध देने वाले पशुओं को मिल्क फीवर से बचाने के लिए एक बार में पूरा दूध न दुहे।

डॉ. देवकिशन गुर्जर, डॉ. वाचस्पति नारायण एवं डॉ. एम.सी. शर्मा
वेटरनरी कॉलेज, नवानियां, उदयपुर

सफलता की कहानी

दिगम्बर सिंह ने भेड़पालन को बनाया आय का साधन

पशुपालन जीविकोपार्जन का एक भरोसेमंद और लाभ का व्यवसाय हो सकता है। राजस्थान में वर्षा आधारित कृषि की अनिश्चितता के बीच पशुपालन एक ठोस विकल्प रहा है। राजस्थान में भेड़पालन ग्रामीण क्षेत्र में एक प्रमुख व्यवसाय रहा है। भरतपुर जिले के कुम्हेर तहसील में रहने वाले दिगम्बर सिंह ने भेड़ पालन को अपनाकर आर्थिक उन्नति का उदाहरण प्रस्तुत किया है। दिगम्बर सिंह भेड़ पालन कई पीढ़ी से कर रहा है। इनके पास पैतृक 2 बीघा जमीन थी परन्तु आय पर्याप्त नहीं होने के कारण भेड़ पालन को व्यवसाय के रूप में अपनाया और पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) से सम्पर्क कर समय–समय पर वैज्ञानिक विधियों से भेड़ पालन, आवास प्रबंधन, खनिज लवण की उपयोगिता, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, संतुलित पशु आहार, टीकाकरण, कृमिनाशक दवा के महत्व आदि का प्रशिक्षण प्राप्त कर अच्छा भेड़ पालन कर रहे हैं। पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में भाग लेते हैं तथा व्यक्तिगत एवं दूरभाष पर समय–समय पर जानकारी व समस्याओं के निवारण हेतु संपर्क में रहते हैं। दिगम्बर सिंह के पास वर्तमान में 70 मादा भेड़, 1 नर भेड़ एवं 10 भेड़ के छोटे बच्चे हैं, जिससे प्रतिवर्ष 60–65 मेमने विक्रय करते हैं। एक मेमने के विक्रय से लगभग 10000/–रू. प्राप्त करते हें। इसके अलावा ऊन विक्रय से भी आय अर्जित करते हैं। दिगम्बर सिंह कृषि से भी 12000/–रू. प्रतिवर्ष प्राप्त करते हैं। इस प्रकार दिगम्बर सिंह लगभग 5 से 5.50 लाख रू. प्रति वर्ष आमदनी प्राप्त कर लेते है। 53 वर्षीय दिगम्बर सिंह ने भेड़ पालन की मदद से अशिक्षा व गरीबी को पीछे छोड़ते हुए आर्थिक आत्मनिर्भरता की एक मिसाल कायम की है।

सम्पर्क–दिगम्बर सिंह श्री रामसिंह
कुम्हेर, भरतपुर (9950068893)

निदेशक की कलम से...

सर्दी में रखें पशुओं की खुराक का ध्यान

विभिन्न मौसम के दौरान विभिन्न तरीके अपनाकर पशुओं के स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। अलग–अलग मौसम में पशुओं की उत्पादकता, शारीरिक जरूरतें तथा बीमारियां खास होती है। सदी के मौसम में ज्यादातर पशु ब्याहते है। दुधारू पशु दूध देने के सामर्थ्य शिखर पर होते है तथा हरा चारा बहुत मात्रा में उपलब्ध होता है, साथ ही यह मौसम तंदुरूस्ती का मौसम भी माना जाता है। परन्तु इस मौसम में पशुओं की जरूरतें विशेष होने के कारण इनकी देखभाल का विशेष ध्यान रखना होता है। सर्दी में पशुओं के लिए हरा चारा की उपलब्धता भरपूर होती है। इस दौरान अक्सर पशुओं का वजन बढ़ जाता है जो आने वाले समय में उनके लिए महत्वपूर्ण होता है। ध्यान रहें हरा चारा ज्यादा मात्रा में खाने से भी गैस के कारण अफरा जैसी समस्या उत्पन्न हो सकती है। इसलिए पशु आहार में सूखा चारा भी आवश्यक मात्रा में होना चाहिए। साथ ही चारे का पाचन अच्छी मात्रा में होने के लिए मीठा सोड़ा पशु आहार में नियमित रूप से इस्तेमाल किया जाना चाहिए। इस मौसम में दुधारू पशुओं में ऊर्जा की जरूरत होती है अतः उन्हें दाने के साथ पीसी हुई मक्की, गेंहू, बाजरा, गुड़ के साथ पकाकर खिलाना फायदेमंद होता है। पशुओं को फलीदार चारे के साथ गैर फलीदार चारे (जई, रई, घास) मिलाकर खिलाया जाये तो उनकी प्रोटीन एवं ऊर्जा की मांग पूरी की जा सकती है। हरा चारा की कटाई के बाद थोड़ी देर सूरज की रोशन में सुखाएं और उसके बाद ही पशुओं को खिलाएं। जहां तक हो सके पशुओं को पानी गुनगुना करके पिलाना चाहिए। प्रजनन के लिए सर्दी सबसे अच्छा मौसम होता है। दुधारू पशु खासकर भैंसें सर्दी में मदकाल (गर्मी) में आती है क्योंकि भैंसों में मदकाल के लक्षण ज्यादा स्पष्ट नहीं होते, उनके गर्मी में आने के संकेत, जैसे– बार–बार पेशाब करना, योनि से चिपचिपा पदार्थ निकलना, दूध में कमी आना, पहचानना जरूरी हैं। इस प्रकार पशुओं को ठंड से बचाते हुए उन्हें सन्तुलित आहार देकर स्वस्थ व उत्पादक रखा जा सकता है।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

"धीणे री बात्यां"
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया